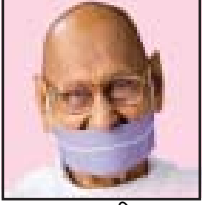


मूल्यपरक शिक्षा : सिद्धान्त और प्रयोग



भाव से व्यवहार बदलता है और व्यवहार से भाव बदलता है। भाव और व्यवहार का गहरा संबंध है। हम मानते हैं कि जैसा भाव होता है, वैसा व्यवहार बनता है। किन्तु आज की एक पद्धति है 'बायोफीड'। इसके द्वारा व्यवहार को बदल कर भी भाव को बदला जा सकता है। बाहर के द्वारा भीतर को बदला जा सकता है और भीतर के द्वारा बाहर को बदला जा सकता है।

विद्यार्थी के व्यवहार को बदलना है तो कुछ प्रयोग करने होंगे। प्रत्येक व्यक्ति में सोचने-समझने की शक्ति होती है और जब कुछ प्रयोग किये जाते हैं तब चेतना बहुत शीघ्र जागृत हो जाती है। बुद्धि परीक्षा के अनेक प्रयोग किये जाते हैं। उसी प्रकार आदत के परिवर्तन के लिये भी अनेक प्रयोग किये जा सकते हैं।

जब भाव परिवर्तन होता है तब व्यवहार अवश्य बदलता है। जैसा भाव होता है, वैसा व्यवहार बनता है। इसके बीच में विज्ञान की एक कड़ी और जुड़ती है कि भाव द्वारा रसायन पैदा होता है। रसायन भाव पैदा करता है, प्रत्येक व्यवहार के पीछे एक रसायन पैदा होता है। भाव का रसायन भिन्न होता है, क्रोध और क्षमा का रसायन भिन्न होता है। जितने भाव हैं उतने ही रसायन है। भाव के द्वारा रसायन बदलता है और रसायन के द्वारा व्यवहार। बात जुड़ी हुई है। यह बात सूक्ष्म हो जाती है। व्यवहार-परिवर्तन का भी अभ्यास कराना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ।

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है : मुनि किशनलाल

लाडनूँ 5 सितम्बर। 'प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने शिक्षक को भावी पीढ़ी, समाज एवं राष्ट्र का निर्माता तथा लोकतन्त्र का रक्षक बताया। उन्होंने कहा इन्द्रीयजयी शिक्षक ही विद्यार्थियों को आदर्शवान, चरित्रवान, स्वावलम्बी एवं अध्ययनशील बनाकर उनके जीवन की दिशा बदल सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों को अपनी संतान की तरह स्नेह देकर उनमें सद्संस्कारों के बीज वपन कर सकते हैं।' मुनिश्री आज स्थानीय विमल विद्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल में शिक्षक दिवस समारोह में शिक्षक एवं विद्यार्थी के परस्पर क्रमशः पृ. 2 पैरा.2..



आओ हम जीना सीखें : ऋत चिन्तन

प्रशस्त सोच का तीसरा बिन्दु है – ऋत चिन्तन। ऋत चिन्तन अर्थात् यथार्थ चिन्तन। कुछ लोग कल्पनाप्रिय होते हैं। गगनचुम्बी योजना बनाते हैं पर क्रियान्विति के लिये उनके पास ठोस जमीन नहीं होती। ऐसे व्यक्ति प्रथम तो किसी कार्य को शुरू करते ही नहीं। यदि कर भी देते हैं तो उसे निष्पत्ति तक नहीं पहुंचा सकते। आजकल प्रबन्धन की चर्चा जोर-शोर से प्रचलित है। समयबद्ध कार्य करने की बात प्रबन्धन की हर इकाई के साथ जुड़ी हुई है। आप कोई भी योजना बनाएं, निर्धारित समय-सीमा के भीतर-भीतर उसे निष्पत्ति तक पहुंचाने का लक्ष्य बनाएं; अन्यथा कालः पिबति तद् रसम् अर्थात् कार्य में होने वाला विलम्ब उसके रस को खत्म कर देता है, वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है। मनुष्य विचार करता है। विचारों के अच्छे और बुरे होने का मूलभूत कारण है – भाव। मन स्थूल है। मन के पीछे या मन के भीतर छिपा है भाव। भाव अशुद्ध है तो मन शुद्ध कैसे होगा? विचार शुद्ध कहां से आयेगा? अतः अपेक्षा है भाव शुद्धि की। प्रशस्त सोच से भाव शुद्ध बनते हैं और भावशुद्धि से प्रशस्त सोच का निर्माण होता है। यह उनका अन्योन्याश्रित संबंध है। – आचार्य महाश्रमण।



जीवन विज्ञान विद्यार्थी-शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

सरदारशहर 12 सितम्बर। जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, सरदारशहर के तत्वावधान में स्थानीय उस्मानिया अंजुमन बालिका विद्यालय के प्रांगण में जीवन विज्ञान विद्यार्थी-शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राजकीय अंजुमन उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय अंजुमन प्राथमिक विद्यालय, श्रीमती फातिमा खोखर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा राजकीय प्राथमिक विद्यालय वार्ड 27, सरदारशहर के लगभग 200 विद्यार्थी एवं 15 शिक्षकों ने भाग लेकर जीवन विज्ञान की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक जानकारी प्राप्त की। मुख्य रूप से प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोगों का अभ्यास करवाते हुए केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने – अणुव्रत गीत, आसन, महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, ज्ञानकेन्द्र प्रेक्षा, संकल्प एवं कृतज्ञता के प्रयोगों की सैद्धान्तिक जानकारी भी दी। उपस्थित गणमान्य नागरिकों एवं शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास है, परन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति में शारीरिक विकास पर अल्प एवं बौद्धिक विकास पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है। व्यक्तित्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम मानसिक एवं भावनात्मक विकास पर नगण्य चिन्तन है। इसका परिणाम असंतुलित व्यक्तित्व के रूप में होता है। उन्होंने आगे बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' से शिक्षा के इस अधूरेपन की पूर्ति संभव है। विद्यार्थी जीवन से ही जीवन विज्ञान के छोटे-छोटे आध्यात्मिक प्रयोगों द्वारा जीवन को परिष्कृत कर अनुकरणीय व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है। कार्यक्रम में रामावतार संजय कुमार कन्दोई के आर्थिक सौजन्य से जरूरतमंद क्रमशः पृ. 2 पैरा.1.

भावनात्मक स्वास्थ्य : मुनि किशनलाल

भाव एक संवेग है, जिसको स्वीकार कर व्यक्ति अकल्पित कार्य कर लेता है। भावनात्मक स्वास्थ्य का तात्पर्य है – भावात्मक संतुलन। भाव के दो प्रकार हैं – निर्मल भाव और मलिन भाव। निर्मल भाव चेतना को विकसित करने के लिये आवश्यक है। एक सैनिक देश की सुरक्षा के लिये अपने आप को न्यौछावर कर देता है। खिलाड़ी के रूप में एक धावक ओलम्पिक में स्वर्ण पदक पाने के लिये महीनों अभ्यास करता है। संवेगों से शरीर की पूरी कार्य प्रणाली बदल जाती है। अति-उत्साह से व्यक्ति ऐसे कार्य कर बैठता है जिसकी उसने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। प्रबल संवेग क्रोध अथवा काम का आवेग आने पर आदमी पागल जैसा व्यवहार कर बैठता है।

प्रेक्षा से विवेक चेतना को जगाया जा सकता है। विवेक चेतना द्वारा अच्छे-बुरे भावों में भेद कर अपनी चेतना को तटस्थ बनाना होता है। राग-द्वेष की दृष्टि को दूर कर तीसरी दृष्टि निर्मल भाव को विकसित करनी होती है। क्रोध के निवारण के लिये दीर्घ श्वास, महाप्राण ध्वनि, ज्योति केन्द्र पर श्वेत रंग का ध्यान तथा अनुप्रेक्षा के द्वारा परिवर्तन घटित हो सकता है। इसी तरह अन्य प्रवृत्तियों को भी संतुलित किया जा सकता है। इसके लिये अपने ज्ञान को तटस्थ बनाना होता है। इस हेतु दर्शन केन्द्र (आज्ञा चक्र) पर निर्मल भावों को केन्द्रित करें। मस्तिष्क के दाहिने पटल पर शुद्ध भावधारा से निर्मल चित्र बनाकर उसे अपने व्यवहार में साकार बनाते हुए साक्षात् करें।

मैत्री की अनुप्रेक्षा – महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग के पश्चात् मेरुदण्ड के अन्त में शक्ति केन्द्र पर नीले रंग का ध्यान करें। अनुचिन्तन करें – मैं मानवीय संबंधों में विश्वास रखता हूँ, इसलिये सभी के साथ मैत्री रखूंगा। इसे मानस पटल पर देखते हुए नौ बार मानसिक जप करें। मैत्री के बाधक तत्त्व – आग्रह, विचार-भेद, रुचि-भेद, स्वार्थ-भेद इनसे बचें, जिससे मैत्री साकार हो सके।

क्रमशः पृ. 1 पैरा.2. विद्यार्थियों को 101 विद्यालय गणवेश एवं शिक्षण सामग्री का वितरण किया गया। जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, सरदारशहर के कार्यकारी अध्यक्ष उदयचन्द दूगड़ 'दी ग्रेट' ने कहा कि जीवन विज्ञान जीने की सही राह दिखाता है। संस्था के मंत्री संजय दीक्षित ने अकादमी की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए जीवन विज्ञान के प्रयोगों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया। कार्यक्रम में डॉ. आमीन बेहलीम, पार्षद नूरमोहम्मद, हसरंज सोनी, उमरदीन सैयद, मनफूल खां फौजी सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में राजकीय अंजुमन उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य सीताराम सोनी ने आभार व्यक्त कर यहां सीखे हुए प्रयोगों को विद्यालय में लागू करने का आश्वासन दिया और इस प्रकार की कार्यशालाएं और आयोजित करने की अपेक्षा जताई।



क्रमशः पृ. 1 पैरा.1. संबंधों एवं दायित्व विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि हमें अपने माता-पिता एवं गुरु के प्रति श्रद्धा रखकर ज्ञानार्जन करना चाहिए। नकारात्मक भावों में जीने से जीवन में असफलता के अलावा कुछ नहीं मिलता। सकारात्मक सोच एवं आत्मविश्वास के साथ जीने से सफलता एवं विकास के रास्ते स्वयं खुल जाते हैं। उन्होंने नशामुक्त रहकर अपने जीवन को उन्नत बनाने का सन्देश दिया एवं महाप्राण ध्वनि, दीर्घश्वास प्रेक्षा, ज्ञानकेन्द्र प्रेक्षा के साथ-साथ नमस्कार मुद्राओं का प्रायोगिक अभ्यास भी करवाया।

स्वस्तिक मुनि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षक हमें मानवीय जीवन की आचार संहिता सिखाते हैं। शिक्षक का सम्मान पूरे राष्ट्र का सम्मान है। उन्होंने विद्यार्थियों को परीक्षा में गलत साधनों को अपनाने के स्थान पर मेहनत से अध्ययन करते हुए आगे बढ़ने का संदेश दिया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अनेकान्त मुनि द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान गीत से हुआ। जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत सहित सम्पूर्ण विद्यालय स्टाफ इस अवसर पर उपस्थित था। भिलाई छत्तीसगढ़ के उद्योगपति दानमल पोरवाल ने शिक्षक दिवस पर विद्यालय स्टाफ को बधाई दी और अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि ज्ञान प्राप्ति के साधनों का आज अभाव नहीं है, परन्तु जो शिक्षा शिक्षक-विद्यार्थी के परस्पर संवाद से प्राप्त हो सकती है उसकी होड़ आज का इंटरनेट ज्ञान कदापि नहीं कर सकता। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक हनुमान मल शर्मा ने संकल्पशक्ति का प्रयोग करवाते हुए अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। विद्यालय प्राचार्य संपत जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अध्यापक कृष्णकान्त रविन्द्र शर्मा ने किया।

मेहरासर चाचेरा में जीवन विज्ञान



सरदारशहर 13 सितम्बर।

जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, सरदारशहर द्वारा राज. माध्यमिक विद्यालय, मेहरासर चाचेरा ग्राम में जीवन विज्ञान विद्यार्थी-शिक्षक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय जी.वि.अकादमी के सहा. निदेशक हनुमानमल शर्मा ने बालक के व्यक्तित्व विकास में भाषा, भूषा, भोजन, भवन एवं भावना के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने जीवन विज्ञान को प्रयोग प्रधान विषय बताते हुए प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के सभी प्रयोगों की सैद्धान्तिक जानकारी एवं प्रायोगिक अभ्यास करवाया। कार्यक्रम का प्रारम्भ छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ। जी. वि. अ. सरदारशहर के कार्यकारी अध्यक्ष उदयचन्द दूगड़ 'दी ग्रेट' ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन एक कोरे कागज की तरह होता है। कर्तव्यनिष्ठ एवं चरित्रवान शिक्षक का दायित्व है कि इस पर ऐसी इबारत उकेरे, जिससे समाज और राष्ट्र का हित हो। मंत्री संजय दीक्षित ने अकादमी के कार्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम पश्चात् नागरमल चम्पालाल जांगीड़ के आर्थिक सौजन्य से जरूरतमंद विद्यार्थियों को शाला गणवेश एवं शिक्षण सामग्री का वितरण किया गया। कार्यशाला में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के लगभग 200 विद्यार्थी एवं 15 शिक्षकों ने भाग लिया। विद्यालय प्राचार्य हरजीराम ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम आयोजन में सेवानिवृत्त शिक्षक राजकुमार सोनी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।